REVIEW OF RESEARCH

दर्शन और शिक्षा एक दुसरे के पूरक हैं, कैसे?

डॉ.राम निवास

सहायक प्रोफ़ेसर शिक्षा संकाय(CIE) , दिल्ली विश्वविद्यालय , दिल्ली.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

परिचय

दर्शन और शिक्षा, यह विषय शिक्षार्थियों को दर्शन व शिक्षा से परिचित करवाते हुए, इनके आपसी संबंधों पर प्रकाश डालता। दर्शन और शिक्षा एक दूसरे का सहायक होते हुए सुशिक्षित, सुव्यवस्थित,व सुसंस्कृत समाज, व राष्ट्र का निर्माण करने में भूमिका निभाते हैं। दर्शन शिक्षा को दार्शनिक आधार प्रदान करता है जिसके बिना शिक्षा न तो अपने उद्देश्यों को निर्धारित कर पाती है न ही उनको प्राप्त करने का मार्ग खोज पाती है। दर्शन व्यक्ति की विभिन्न विषयों का विश्लेषण कर निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता ही नहीं करता बल्कि एक दृष्टिकोण व नई जीवन पद्धति का निर्माण करने में भी सहायता करता है। **ब्राइट मैंन** महोदय भी कहते है कि "दर्शन अनुभव के विषय में निष्कर्षों का समूह न होकर मूल रूप से अनुभव के प्रति एक दृष्टिकोण या पद्धति है।" दर्शन को लेटन परिभाषित करते हुए कहते हैं, "विज्ञान के समान दर्शन में भी व्यवस्थित चिंतन के परिणाम स्वरूप पहुंचे हुए सिद्धांत और अंतर्दृष्टि होते हैं। " दर्शन व शिक्षा देश व समाज की सीमाओं से परे हैं। इसको हरबर्ट स्पेंसर कहते हैं कि, "दर्शन प्रत्येक वस्तु से संबंधित हैं, वह एक सार्वभौमिक विज्ञान है।" शिक्षा अपने अनुभव व अनुभूति से दर्शन को शिक्षित करती है, जिससे नए सिद्धांतों व दर्शनों का उदय मार्ग बनता है।

शिक्षा व दर्शन एक दूसरे के पूरक हैं। और दर्शन शिक्षा को आधार प्रदान करता है। जिसके आधार पर शिक्षा व्यक्ति,समाज,व राष्ट्रों के व्यवहार में मूल्यों का समावेश कर राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने में भूमिका निभाती है। अतः दर्शन और शिक्षा दोनों मिलकर ही किसी समाज व देश की दिशा व दशा निर्धारित करने का काम करते हैं।

दर्शन (Philosophy)

दर्शन को परिभाषित करना आसान नहीं है, या यूँ कहें कि दर्शन को किसी एक परिभाषा की परिधि में नहीं बाँधा जा सकता, क्योंकि इसको देखने और समझने के लिए समय समय पर विद्वानों ने विभिन्न मत दिए हैं, उन्ही मतों का आदर करते हुए हम दर्शन को समझने का प्रयास करते हैं।दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'दृश्' धातु से हुई है -''दृश्यते यथार्थ तत्वमनेन'' अर्थात्जो यथार्थ तत्व के तर्क युक्तविवेचना करे वही दर्शन है। अंग्रेजी के शब्द फिलॉसफी(Philos=love +Sophia=wisdom, means love to wisdom) हिंदी में जिसका शाब्दिक अर्थ''ज्ञान के प्रति अनुराग'' होता है। पहले भारतीय व्याख्या को समझने का प्रयास करते हैं जो कि तत्व का तर्क-युक्त विश्लेषण करने के पक्ष में है, ये ही इसका वैज्ञानिक पक्ष भी है क्योंकि विज्ञान की तरह दर्शन भी सत्य की बात करता है विज्ञान भी सत्य का समर्थक है, इसलिए दर्शन शिक्षा व समाज को भटकाव से बचाता है और विकट परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। दर्शन का क्षेत्र केवल ज्ञानतक न रहकर संपूर्ण व्यक्तित्व को अपने आप में समाहित करता है। दर्शन केवल चिन्तन का विषय नही है बल्कि अनुभूति का विषय भी है, अनुभूति अनुभव के बिना नहीं हो सकती और अनुभव स्वयं कार्य किये बिना नहीं हो सकता जैसे

LBP PUBLICATION

की कहा जाता है 'आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता' अर्थात अनुभव तभी होगा जब स्वयं उस काम में शामिल होंगे तभी सत्य को जान पायेंगे, तर्क कर पायेगा व विश्लेषण कर पायेगा अतः दर्शन स्व-दर्शन का विषय भी है । यदि भारतीय दर्शन की आध्यात्मिक व्याख्या के अनुसार देखें तो यह सत्य है कि दर्शन द्वारा आत्म-ज्ञान कीआत्मानुभूति होती है। दर्शन हमारी संवेदनावोंएवं मनोदशा को प्रतिबिम्बित करता है और दर्शन के मार्गदर्शन में संवेदनाएं हमारे कार्यो को नियंत्रित करती है। अतः संवेदनाएं है तो दर्शन है और दर्शन है तो कोई जीवन शैली, जीवन शैली है तो सम्बन्ध है और सम्बन्ध हैं तो भावनाएं हैं।

अब दर्शन के इस अर्थ पर भी दृष्टि डालते है जहाँ दर्शन को 'ज्ञान के प्रति अनुराग कहा'। अनुराग आंतरिक अनुभूति वप्रेम के बिना नहीं हो सकता, और संवेदनाओं के बिना प्रेम नहीं हो सकता। ज्ञान के प्रति अनुराग को दर्शन की इस व्याख्या से भी समझा जा सकता है कि यह ज्ञान के प्रति संपूर्ण समर्पण ही नहीं, बल्कि ज्ञान के प्रति प्रेम, जीवन के प्रति सतर्कता का प्रतीक है जो व्यक्ति को स्व-निर्णय लेने की क्षमता ही नहीं देता बल्कि मार्गदर्शन भी करता है। दर्शन जीवन के नए नए सिधान्तों का निर्माण कर जीवन अनुशासित ही नहीं करता वरन जीवन की नई नई संस्कृतियाँ भी विकसित करता है और नए दर्शन के जन्म का मार्ग भी प्रशस्त करता है। **ब्राइटमैन ने भी दर्शन को थोड़े विस्तृत रूप में परिभाषित करते हुए कहा है कि** कि "दर्शन की परिभाषा एक ऐसे प्रयत्न के रूप में दी जाती है जिसके द्वारा सम्पूण्र मानव अनुभूतियों के विषय में सत्यता से विचार किया जाता है अथवा जिसके द्वारा हम अपने अनुभवों द्वारा अपने अनुभवों का वास्तविक सार जानते हैं"। विलियम्स एर्निस्ट हॉकिंग की पुस्तक 'दर्शन के प्रकार' जिसका अनुवादरमेशचंद्र ने किया, इसमें वे लिखते हैं कि 'जब हम किसी व्यक्ति के दर्शन की चर्चा करते हैं तो उससे हमारा तात्पर्य केवल उसके विश्वासों से होता है।' इस बात यह भी स्पष्ट होता है जो कि लोक प्रचलित भी है, और व्यवहार में भी है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक दर्शन व मत होता है क्योंकि हर व्यक्ति का अपना एक विश्वासहोता है जिसके आधार पर वह अपने जीवन की दिशा ही निर्धारित नहीं करता बल्कि उसको जीता भी है। किसी व्यक्ति के विश्वासों से हमारा अभिप्राय उन सभी निर्णयों से है, जिसमे दृढ विश्वास व निश्चित विचारों के साथ साथ वे संस्कार भी हैं, जिनके अधीन रहकर वह कार्य करता है। विश्वास के अंतर्गत मत आते हैं जिनके अनुसार मनुष्य अपना जीवन बिताता है या यूँ कहे वहअपने दर्शन का निर्माण करता है।इस बात को हम चैस्तर्न की इस परिभाषा से समझते हैं जिसमे वे कहते हैं कि " किसी भी मनुष्य के लिए जो अधिक व्यवहारिक और महत्वपूर्ण बात है वह उसका विश्वास के बारे में दृष्टिकोण है"। यही विश्वास उसका दर्शन भी है।

दर्शन की परिभाषाएँ

विभिन्न दार्शनिकों द्वारा समय समय पर दी परिभाषायओंके आधार पर दर्शन को समझाने का प्रयास करते हैं:-

यूनान के महान दार्शनिक प्लूटो का विचार है कि"वह व्यक्ति जो प्रत्येक ज्ञान के लिए रूचि रखता है और जो सीखने का इच्छुक है और सीखते सीखते जिसकी संतुष्टि नहीं होती, दार्शनिक कहा जा सकता है।'' ("He who has a taste for every sort of knowledge and who he is anxious to learn and is never satisfied may be just termed a philosopher .") अर्थात जो ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा रखता है जो हमेशा सिखने की ललक रखता है, जो कभी संतुष्ट नहीं होता वास्तव में वही दार्शनिक है। जिसका सीधा अर्थ यह है कि दर्शन मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करने के ऐसे मार्ग पर डालता जो कभी समाप्त नहीं होता। किसी शायर ने भी क्या खूब कहा है "मेरी जिंदगी एक मुसल्सल सफ़र है, मैं मंज़िल पे पहुंचा तो मंज़िल बढ़ा दी"।

प्लूटो के विचार का समर्थन करते हुए**बरट्रेंड रसेल**"अन्य विधाओं के समान दर्शन का मुख्य उद्देश्य-ज्ञान की प्राप्ति है।''("philosophy like all other studies, aims primarily at knowledge.") **आर0 डब्ल्यू सेलर्स**"दर्शन एक व्यवस्थित विचार द्वारा विश्व और मनुष्य की प्रकृति के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का निरंतर प्रयत्न है।''("philosophy is an unceasing effort to discern the general truth that lies behind the particular facts, to discern also the reality that has behind appearance.") **जॉन डी0वी0 का कहना है-**''जब कभी दर्शन पर गंभीरता पूर्वक के विचार किया

गया है तो यही निश्चय हुआ कि दर्शन ज्ञान प्राप्ति का महत्व प्रकट करता है जो ज्ञान जीवन के आचरण को प्रभावित करता है।'' की बात कहते हैं।

यूनान के ही एक अन्य दार्शनिक **अरस्तु का कथन देखिये** ''दर्शन एक ऐसा विज्ञान है जो परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जॉच करता है।'' जिसका भाव है कि दर्शन किसी भी विचार, तथ्य या तत्व की सत्यता या प्रमाणिकता की विज्ञान के प्रयोगों की तरह तर्क के आधार पर गहरे से जाँच का पक्षधर है।**कान्ट महोदय कहते हैं कि**''दर्शन बोध क्रिया का विज्ञान और उसकी आलोचना है।'' इनके कथन के आधार पर अब दर्शन को विज्ञानों का विज्ञान और आलोचना का विज्ञान माना जाता है। कामटे और हरबर्ट स्पेन्सर भी इनका समर्थन करते हुए क्रमश कहते हैं कि ''दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है।'' और ''दर्शन विज्ञानों का समन्वय या विश्व व्यापक विज्ञान है।'' दर्शन तथ्यों, विचारों व तत्वों का वैज्ञानिक,नियंत्रित व निष्पक्ष विश्लेषण करता है। **हैन्डर्सन के अनुसार भी हम इसको समझ सकते हैं**''दर्शन कुछ अत्यंत कठिन समस्याओं का कठोर नियंत्रित तथा सुरक्षित विश्लेषण है जिसका सामना मनुष्य करता है।

दर्शन की प्रकृति (Nature of philosophy)

दर्शन यानी दाशर्निक चिन्तन की प्रकृति या स्वभाव उन आधार भूत प्रश्नों की खोज करना है, जिसमें जगत क्या है? इसकी उत्पत्ति का क्या रहस्य है? जीवन क्या है? जीवन की सार्थकताक्या है? आत्मा क्या है? ईश्वर का स्वरूप क्या है? आदि प्रश्न शामिल हैं। दर्शन प्रकृति के रहस्यों को ढूढने का प्रयास तो करता ही बल्कि मनुष्य केसामाजिक होने की इच्छा या लक्ष्य की सार्थकताको अपना केन्द्र बिंदु मानकर उसका गहराई से विश्लेषण करता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को दर्शन-शास्त्र का अध्ययन ज़रुर करना चाहिए। शिक्षकों व भावी शिक्षकों के लिए तो अत्यंत आवश्यक है,क्योंकि उनको न केवल नीतियों का विश्लेषण करना है बल्कि विभिन्न नीतियों के निर्माण में सहायता भी करनी है। उनको शिक्षार्थी,समाज,व राष्ट्र को दिशा प्रदान करनी है।

क्योंकि एक शिक्षक ही एक राष्ट्र निर्माता भी होता है। अतः एक शिक्षक को दार्शनिक रूप से सशक्त होना चाहिए। इसलिएशिक्षा-शास्त्र के विद्यार्थियों के लिये विशेष कर आवश्यक जान पड़ता है। इसके कई कारण हैं -

- **जीवन को समझने के लिए (to understand the life)**-कोई भी दर्शन चाहे भारतीय हो या पाश्चात्य दोनों ही दृष्टिकोणों से दर्शन जीवन को समझने और सही ढंग जीने में सहायता करता है। प्रत्येक दार्शनिक, शिक्षा-शास्त्री या आम आदमी यह विचार अवश्य ही करता है कि जीवन क्या है? और मिला क्यों है? यही विचार व्यक्ति को जीवन का सही मार्ग चुनने में मदद करता है, मार्ग का चुनाव ही यह तय करता है कि उसका भविष्य क्या होगा? जीवन के ये विचार व अनुभव उसमें एक विशिष्ट दृष्टिकोण पैदा करते हैं,जो उसका जीवन दर्शन बन जाता है।
- **अर्थ के प्रति समझ विकसित करने के लिए (to develop an understanding towards economy) – आर्थिक**दर्शन का अर्थ मात्र हमें व्यापारिक सिधान्तों, बाज़ार की व्यवस्था की जानकारी देना या इसको समझने का दृष्टिकोण पैदा करना ही नहीं है बल्कि अर्थ का अर्थ-पूर्ण प्रयोग करने के लिए भी प्रेरित करता है। अतः यह आर्थिक क्रियाओं पर नियंत्रण कैसे रखें के साथ साथ यह भी सिखाता है कि हम आय व्यय की आदतों को भी नियंत्रित रखें, जिससे हमारा व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन खुश हाल व सुखमय रहे। यदि व्यक्ति का जीवन सही व सुखी है तो राष्ट्रीय जीवन भी खुशहाल होता है। अतः आर्थिक दर्शन न केवल व्यक्ति बल्कि राष्ट्र व वैश्विक समृद्धि की दिशा व दशा का भी कारण बनता है ।

राजनैतिक समझ विकसित करना (to develop political understanding)-

वर्तमान परिस्थियों राजनैतिक दर्शन की बहुत ज्यादा आवश्यकता है। वर्तमान में बहुत से राजनीतिज्ञ ऐसी बयानबाज़ी करते हैं, जिससे यह प्रत्यक्ष दिखता है की न तो उन्हें दर्शन की समझ है न ही ये ध्यान की उनका विचार यद्यपि व्यक्तिगत है परन्तु वह राष्ट्र व उनके दल की दार्शनिक सोच का भी परिचय देता है। राजनैतिक दर्शन न केवल विचाधाराओं को समझाने में सहायता करता है, बल्कि राज्य की नीति क्या होगी यह भी तय करता है। विभिन्न

राजनैतिक दार्शनिकों ने समय समय पर अनेक दर्शनों के मध्यम से राजनीति की व्याख्या की है। उन्ही विचारधाराओं आधार पर अनेक दर्शन हैं जैसे मार्क्सवाद, माओवादी, फासीवाद, नाजीवाद, सामाजवाद, राजतन्त्र व लोकतंत्र आदि राजनैतिक दर्शनों का उदय हुआ। जहाँ लोकतंत्र में लोकतांत्रिक, राजतन्त्र में राजतान्त्रिक दर्शन का दर्शन होता है वहीं समाजवादी में समाजवादी दर्शन का परिचय मिलता है। लोकताँत्रिक दर्शन लोकतंत्र प्रणाली के माध्यम से व्यक्ति को समान अधिकार व अवसर, सम्मान, व पूर्ण स्वतंत्रता ही प्रदान नहीं करती बल्कि इनकी सुरक्षा सवैंधानिक प्रबंध भी करती है। इस दर्शन के मूल में राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना व उनका क्रमिक विकास का उद्देश्य रहता है। इस प्रकार राजनैतिक दर्शन किसी भी राष्ट्र की दिशा तय करता है की उसकी नागरिक नीति व विदेश-नीति क्या होगी। इसी प्रकार अन्य दर्शन भी अपनी अपनी विचारधारा के अनुसार शासन प्रणालियों के माध्यम से वहां के व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, व शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करते हैं।

- **शैक्षिक दृष्टिकोण विकसित करना (to develop educational vision)-**

यह सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र मज़बूती व तरक्की का कारण उसकी शैक्षिक नीति होती है, यह भी कहा जाता है की किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है। यदि किसी की कक्षाएं चिंतनशील, मननशील, सृजनशील, क्रियाशील व दार्शनिक हैं तो उस राष्ट्र की प्रगति को कोई नहीं रोक सकता। कक्षा व विद्यालय से किसी राष्ट्र के शैक्षिक दर्शन का निर्माण होता है। किसी भी समाज,राष्ट्र व व्यक्ति के शैक्षिक दृष्टिकोण का अनुमान उसमे रहने वाले लोगों के के जीवन जीने तरीके से लग जाता है जो कि संस्कृति का परिचायक भी है और दर्शन का परिचय भी देता है। समय समय पर विभिन्न विचारधारों के आधार पर अनेक दर्शनों का निर्माण हुआ है चाहे वह भारतीय दर्शन हो या पाश्चत्य दर्शन। भारतीय दर्शनों में सांख्य, वैशेषिक, चार्वाक, न्याय, योग, मीमांसा (पूर्व मीमांसा व उत्तर मीमांसा), बौद्ध दर्शन व जैन दर्शन और पाश्चत्य दर्शन आदर्शवादी, यथार्थवादी, भौतिकवादी, अध्यात्मवादी, प्रकृतिवादी है या प्रयोजनवादी है। प्रत्येक दर्शन की अपनी एक शैक्षिक नीति है व शैक्षिक दृष्टिकोण है।

दर्शन का क्षेत्र (Scope of Philosophy)

दर्शन एवं जीवन में किसी प्रकार का अंतर नहीं है। अतः संपूर्ण जीवन दर्शन पर आधारित होता है। दर्शन जीवन से अनुभव लेकर ही नए दर्शन का निर्माण करता है। उदाहरण के लिए मनुष्य नए जीवन में आत्मा परमात्मा की अनुभूति को समझने के लिए अध्यात्मवाद या आदर्शवाद का सहारा लिया, फिर प्रकृतिवाद का पदार्पण हुआ और उसके बाद प्रयोजनवाद, यथार्थवाद आदि आदि। भारतीय दर्शन परम्परा में यदि दर्शन के क्रम को देखे तो सांख्य दर्शन, योगदर्शन, वैशेषिक दर्शन, चार्वाक दर्शन, वेदांत दर्शन, बौद्ध व जैन दर्शन आदि दर्शन हैं। एक शास्त्र के रूप में दर्शन के अंतर्गत आत्मा व परमात्मा, मूर्त व अमूर्त,ब्रह्माण्ड व सृष्टि, चेतन व अचेतन, भ्रम व सत्य, तर्क, ज्ञान व विज्ञान संबंधी प्रश्नों पर विचार करता है । अतः दर्शन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान-मीमांसा, तत्व-मीमांसा, मूल्य-मीमांसा और तर्क का अध्ययन करना है।

LBP PUBLICATION

दर्शन का क्षेत्र (AREA OF PHILOSOPHY)					
ज्ञान मीमांसा Epistemology	तत्वमीमांसा Metaphysics	मुल्यामिमांसा Axiology	विज्ञान-दर्शन philosophy of science	सामाजिक-विज्ञान दर्शन Philosophy of Social-science	भाषा दर्शन Semantics
असम्भववादी Agnosticism	सत्ता-मीमांसा Ontology	नीति-शास्त्र Ethics		सामाजिक दर्शन Social philosophy	
संदेहवाद Skepticism	ब्रह्माण्ड-विज्ञान Cosmology	सोंदर्य-शास्त्र Aesthetic		राजनैतिक दर्शन Political philosophy	
सम्भववादी Affirmation knowledge	सृष्टि-विज्ञान Cosmogony	तर्क-शास्त्र logic		आर्थिक दर्शन Economic philosophy	
	युगांत-विज्ञान Eschatology			इतिहास दर्शन Historical philosophy	
	आत्म-दर्शन Philosophy of self			शिक्षा दर्शन Educational philosophy	

ज्ञान-मीमांसा (EPISTMOLOGY)-

ज्ञान-मीमांसा इस शब्द के अर्थ से ही इसका अनुमान लगाया जा सकता है कि ज्ञान कि 'विवेचना करना'। इसका सीधा सा अर्थ है कि ज्ञान का आरम्भ व ज्ञान की प्रकृति, स्रोत, विधियाँ, सीमायें और ज्ञान की प्रमाणिकता क्या है? ज्ञाता और ज्ञात के दार्शनिक सम्बन्ध की व्याख्या के साथ साथ यह भी बताता है कि सत्य व भ्रम क्या है। इसके अंतर्गत असम्भववादी (agnosticism),संदेहवाद(skepticism) और सम्भववाद (affirmation knowledge) इन दृष्टिकोणों का भी अध्ययन किया जाता है।

तत्व-मीमांसा (METAPHISICS)-

आत्मा, परमात्मा, शरीर और प्रकृति का परस्पर संबंधों का अध्ययन करना इसका विषय है। तत्व-मीमांसा वास्तविकता और अस्तित्व का गहन अध्ययन करती है ताकि सत्य तक पहुँचा जा सके और लोग इसका अंतर भी जान सकें। सत्ता-मीमांसा (Ontology) ब्रह्माण्ड-विज्ञान (Cosmology), सृष्टि-विज्ञान (Cosmogony), युगांत-विज्ञान (Eschatology), और आत्म-दर्शन (Philosophy of self) आदि भी इसके अध्ययन के विषय हैं।

मूल्य-मीमांसा (AXIOLOGY)-

इसमें मूल्यों का दार्शनिक अध्ययन किया जाता है जैसे नैतिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व व्यावसायिक मूल्य आदि। यदि हम ये कहें कि 'सत्यम, शिवम्, सुन्दरम' का मूल्यपरक चिंतन करना मूल्य मीमांसा का विषय है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। नीति-शास्त्र (Ethics), सोंदर्य-शास्त्र aesthetics) व तर्क-शास्त्र (logic) भी इसी का अध्ययन क्षेत्र है।

शिक्षा-दर्शन (Educational Philosophy)

शैक्षिकपद्धति व शैक्षिक विचार दर्शन की दर्शन का ही प्रतिबिम्ब होती हैं, जिसमें यह पता चलता है कि दार्शनिक सिद्धांतों व विश्वासों का प्रयोग शिक्षा व्यवस्था व शिक्षा पद्धतियों में कैसे होता है।शिक्षा दर्शन में शिक्षा व दर्शन से संबंधित विचारों का चिंतन व विश्लेषण ही नहीं किया जाता बल्कि दार्शनिक अर्थात् चिन्तनपूर्ण समाधान के लियेभीप्रयत्न करता है। कनिंघम महोदय कहते हैं कि दर्शन की परिभाषा से हम शिक्षा दर्शन की परिभाषा को समझ सकते हैं, और शिक्षा व्यवस्था से दर्शन को।शिक्षा दर्शन के द्वारा शिक्षा व्यवस्था की विभिन्न समस्याओं का समाधान

LBP PUBLICATION

अध्ययन व अनुसंधान करते हुए किया जाताहै। शिक्षा ही दार्शनिकों के विचारों को व्यवहार में लाने का साधन है। **कुछ विचारकों के अनुसार**- दर्शन मौलिक सिद्धांतों की खोज करने में सहायता करता है, और शिक्षा उन सिद्धांतों को व्यवहार में लाती है। इस प्रकार शिक्षा दर्शन में दार्शनिक सिद्धांतों का शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार व्यवहारिक प्रयोग होता है या होना चाहिये इसेबताया जाता है।हेन्डरसन महोदयके शब्दों में-''शिक्षा दर्शन, शिक्षा की समस्याओं के अध्ययन में दर्शन का प्रयोग है।''ब्रुबेकर के अनुसार "शिक्षा दर्शन विचारात्मक (**speculative**), आदर्शात्मक/नियामक (**normative**) और आलोचनात्मक(**critical**) होता है। शिक्षा-दर्शन विचारात्मक पक्ष में शिक्षा केउद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों एवं शिक्षा संबंधी अन्य समस्याओं पर विचार कियाजाता है। शिक्षा-दर्शन इस दृष्टिकोण से आदर्शात्मक/नियामक (**normative**) है, क्योंकि इसके अंतर्गत उन नियमों, सिद्धांतों तथा विश्वासों का निर्माण करता है जिसके माध्यम से शैक्षिक व्यवस्था को सुचारु व व्यवस्थित रूप संचालित किया जाता है।आलोचनात्मक दृष्टिकोण से शिक्षा-दर्शन शिक्षा व्यवस्था से जुड़े विभिन्न समस्याओं को चिन्हित ही नहीं करता बल्कि उनकी अच्लोचात्मक व्याख्या भी करता है, ताकि शिक्षा अपने रास्ते से न भटके और सही रास्ते पे चलते हुए व्यक्ति ,समाज व राष्ट्र के उद्दश्यों की पूर्ति करे। एल. के. जोड़ के अनुसार शिक्षा-दर्शन शिक्षा से संबंधित 'क्या' और 'क्यों' पर विचार करते हुए शिक्षा के सामान्य व विवरणात्मक सिद्धांतों के माध्यम से शिक्षा के क्या कार्य हैं?, इसकी व्याख्या तो करता ही है साथ में विशिष्ट सिद्धांतों के मध्यम से शिक्षा के लक्ष्यों व उद्दश्यों को प्राप्त करने में शिक्षा-प्रक्रिया को दिशा निर्देश भी देता है।

शिक्षा-दर्शन शिशार्थी से संबंधित इन प्रश्नों पर भी विचार करता है कि शिक्षा किस को दी जाए? सबको या योग्य को ? और किस रूप में दी जाए? शिक्षा-दर्शन की यही अवधारणा शिक्षार्थी की धारणाका निर्माण करती है।शिक्षा दर्शन शिक्षक की गुणवत्ता, कौशल, योग्यताओं और नैतिक चरित्र पर भी विचार करता है।क्योंकि एक शिक्षक राष्ट्र निर्माता भी है, बच्चों का ही नहीं बल्कि समाज व देश का भविष्य उनके हाथ में हैं। अतः एक शिक्षक पुर्णतः परिपक्व, गुणी, चरित्रवान, पूर्वाग्रहों से रहित, और दार्शनिक, शैक्षिक व मनोवैज्ञानिक विचारों व विधियों से परिपूर्ण हो ताकि एक स्वस्थ व सशक्त समाज व राष्ट्र का निर्माण हो सके।इन सभी प्रश्नों के साथ साथ शिक्षा-दर्शन विषय सामग्री,शिक्षण विधियों, शैक्षिक मूल्यों, अनुशासन, शिक्षा में स्वतंत्रता या लोकतंत्र की भूमिका पर भी विचार करता है।इस प्रकार शिक्षा-दर्शन शिक्षा से संबंधित सभी विषयों या चुनौतियों को रेखांकित या प्रश्नों के दायरे में ही नहीं लाता, बल्कि अनुसंधान कर उन्हें समाधान तक भी पहुँचाता है।

शिक्षा व दर्शन में सम्बन्ध

शिक्षा व दर्शन दोनों एक दूसरे से अन्तर्सम्बंद्दित हैं शिक्षा के बिना दर्शन न तो बन सकता है और न ही फल व फूल सकता है और यदि दर्शन न हो तो शिक्षा दिशा भ्रमित हो सकती है या यूँ कहे पथ से विचलित हो सकती है। अब विचारणीय बात ये है कि जब शिक्षा दिशा विहीन होगी तो समाज का निर्माण कैसा होगा मतलब ये की शिक्षा का भटकाव व्यक्ति,समाज व राष्ट्र को भटकाव की स्थिति में ला सकता है। अर्थात दर्शन के बिना शिक्षा की संकल्पना करना भी कठिन है क्योंकि दर्शन के बिना न तो उद्देश्यों का निर्धारण हो सकता और न ही प्राप्ति। जिससे यह स्थिति होगी कि 'चले तो बहुत परन्तु पहुंचे कही नहीं'।

शिक्षा दर्शन को अपने कंधे पर बिठा कर विश्व की यात्रा करवाती है, विभिन्न विचारों से मिलवाती है जिनके साथ मिलकर उसकी परख होती, आलोचना होती है, स्वीकृति व अस्वीकृति स्थिति बनती अर्थात वाद-विवाद होता, तर्क-वितर्क होता है, जिसके बाद ये तय होता है कि यह दर्शन समाज को कौन सी दिशा प्रदान करेगा। जब किसी दर्शन पर विचार या तर्क वितर्क हो रहा होता है तभी नए दर्शन के जन्म की पृष्ठ भूमि भी बन रही होती है। इसका अर्थ ये हुआ की शिक्षा दर्शन को फलने फूलने व फैलने में ही सहायता नहीं करती बल्कि विभिन्न दर्शनों के जन्म का कारण भी बनती है। उदाहरण के लिए जैसे भारतीय दर्शनों में आस्तिक व नास्तिक दर्शनों का प्रादुर्भाव एक दूसरे से वादविवाद, तर्क वितर्क का ही परिणाम है, आदर्शवाद, प्रकृतिवाद प्रयोजनवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद आदि दर्शनों का जन्म भी इसी का परिणाम है।यदि हम शिक्षा को दर्शन के पाँव व दर्शन को शिक्षा मस्तिष्क कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इस प्रकार दर्शन एवं शिक्षा के मध्य गहन सम्बन्ध है।व्यक्ति के व्यक्तित्व व चरित्र निर्माणकरने में शिक्षा दर्शन का सहारा लेती है। इसी आधार पर बहुत सेविद्वान इस मत से सहमत हैं कि, जीवन और शिक्षा एक दूसरे के प्रतिबिम्ब हैं। क्योंकि जीवन को जीने से, अनुभव मिलता है और अनुभव शिक्षा में सुधार का कारण बनता है, फिर नीतियों, विधियों, दर्शनों के माध्यम से शिक्षा का का अंग बनता है, और दर्शन के निर्माण में सहायक होता है।

अतः शिक्षा एवं दर्शन पुर्णतः एक-दूसरे पर आश्रित है।एक के अभाव मे दूसरे का अस्तित्व असंभव है।इस सम्बन्ध मे**जेन्टाइल** ने कहा है कि- "शिक्षा दर्शन की सहायता के बिना सही मार्ग पर नहीं बढ़ सकती है।शिक्षा की समग्र समस्याओं का समाधान कराना और उसको क्रियान्वित करना दर्शन का कार्य है तथा दर्शन की प्रवृतियों, समस्याओं एवं विचारों को कार्य-रूप मे परिणित करने का काम शिक्षा का है।जीवन रुपी शरीर का दर्शन मस्तिष्क है और शिक्षा उसके हाथ एवं पैर हैं।जिस प्रकार से शरीर हेतु समस्त अंगों का होना नितांत आवश्यक है उसी प्रकार से शिक्षा हेतु दर्शन और दर्शन हेतु शिक्षा का होना अति आवश्यक है।कतिपय दार्शनिकों के अनुसार शिक्षा एवं दर्शन एक आत्मा व दो शरीर हैं।

दर्शन व शिक्षा अन्तर्सम्बंधित हैं

दर्शन व शिक्षा एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। दर्शन यदि अपने सैधान्तिक गुण के कारण शिक्षा को दिशा निर्देश देता है तो शिक्षा अपने गत्यात्मक गुण से उस विचार को लक्ष्य तक पहुचने में सहायता करती है।इसके समर्थन में अनेक दार्शनिकों व शिक्षाशास्त्रियों नए समय समय पर अपने मत देकर इस सम्बन्ध का गहराई से विश्लेषण किया है। जैसे**एडम महोदय ने**-"शिक्षा दर्शन कागतिशील पहलू है।"("education is dynamic side of education") यह विचार दिया, वहींशिक्षा व दर्शन के सम्बन्ध को**स्पेंसर ने**,"वास्तविक शिक्षा, वास्तविक दर्शन द्वारा ही क्रियान्वित हो सकती है।" ("real education applied through real philosophy") इस विचार के द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है। दर्शन व शिक्षा मजबूत सम्बन्ध के विषय में महान दार्शनिक व शिक्षा विद**फिक्टे** अपने विचार प्रकट करते हुए कहते है कि, "शिक्षा की कला दर्शन के बिना कभी पूर्ण स्पष्टता प्राप्त नहीं कर सकता।"("the art of education will never attain complete clearness without philosophy.") **जेन्टाइल**जीशिक्षा व दर्शन के सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि, "शिक्षा-दर्शन की सहायता के बिना शिक्षा सही मार्ग पर नहीं बढ़ सकती है।"("the process of education cannot go on right lines without the help of philosophy.") और अन्य परिभाषा के अनुसार देखें "दर्शन के बिना शिक्षा द्वारा शिक्षा की वास्तविक प्रकृति का बौद्ध नहीं हो सकता।" ("education without philosophy would mean failure to understand the precise nature of education.")**रास**महोदय दर्शन शिक्षा सम्बन्ध के विषय में कहते हैं कि, "दर्शन व शिक्षा एक सिक्के के दो पहलूहैं; एक ही चीज के विभिन्न विचारों को प्रस्तुत करतें हैं; एक मे दूसरा निहित है; पहला विचारात्मक पहलू है, तथा दूसरा क्रियात्मक पहलू है।"("philosophy and education are like the two sides of the same coin; present different views of the same thing; one is implied by other; the former is contemplative while the other is active side. ")उपरोक्त परिभाषाओं के माध्यम से विभिन्न विचारकों ने शिक्षा व दर्शन को एक दुसरे से अन्तर्सम्बंधित बताया है।

शिक्षा-शास्त्री और महान दार्शनिक-

शिक्षा और दर्शन को इसलिए भी अलग अलग करके नहीं देखा जा सकता क्योंकि सभी दार्शनिक महान शिक्षा-शास्त्री भी हैं। प्रत्येक दर्शन चाहे भारतीय दर्शन परम्परा हो या पाश्चत्य दर्शन का प्रभाव समकालीन शिक्षा प्रक्रिया पर रहा है। दार्शनिकों के विचारों ने शिक्षा को रास्ता दिखाया है चाहे पाठ्यक्रम में सुधार या बदलाव हो या नई नीतियों का गठन। दर्शन के बिना ये संभव नहीं। जहाँ भारतीय दार्शनिकों नए भारतीय शिक्षा में आध्यात्म आधारित शिक्षा के पक्ष को मजबूती से रखा। उन्होंने कठोर व स्वानुशासन के साथ साथ स्वाध्याय व स्वमूल्यांकन की भी वकालत की।प्लूटो जो की आदर्शवादी शिक्षक व दार्शनिक है उन्होंने ने भी अपनी प्रख्यात पुस्तक'रिपब्लिक' मे शिक्षा कि योजना प्रस्तुत की है। इसी प्रकार महान विचारक महात्मा गाँधी ने भी अपने दार्शनिक चिंतक होने का परिचय 'शिक्षा की आधार-भूत योजना' (Basic education policy)देकर दिया जिसे 'वर्धा योजना,१९३७' नाम से भी जाना जाता है। इसके अतिरिक्त अरस्तू,

पैस्तोलोजी आदि विचारकों ने जहाँ आदर्शवादी शिक्षा दर्शन का समर्थन किया, वहीं रूसो प्रकृतिवादी शिक्षा दर्शन की बात करते हैं। जहाँ एक और जॉन डी वी प्रयोजनवादी शिक्षा दर्शन की वकालत करते हैं वहीं सर्वपल्ली राधाकृष्णन, टैगोर, स्वामी विवेकानंद, आदर्शवादी, प्रकृतिवादी व प्रयोजनवादी दर्शन तीनों के बीच सेतु का काम करते हैं। इनके अतिरिक्त महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, अरविन्द, स्वामी दयानंद सरस्वती,अरविन्द घोष आदि भी अपने समय के महान दार्शनिक रहें हैं, जिनके विचारों ने शैक्षिक क्षेत्र मे महान परिवर्तन किये।

समान उद्देश्य-

शिक्षा व दर्शन दोनों का समान उद्देश्य है, मानव को सामाजिक बनाना और समाज को मानवीय बनाना। दोनों का ही उद्देश्य मानव, समाज, राष्ट्र, व विश्व का कल्याण करना है। दोनों का उद्देश्य मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की और ले जाना है। दोनों का उद्देश्य सत्य की खोज करना है ,जिसमे दर्शन रास्ता दिखता है और दर्शन उसे वहां तक ले जाता है। या यूँ कहे की दर्शन व शिक्षा एक दूसरे के बिना अधूरे हैं दोनों एक दूसरे के सहायक हैं।

दर्शन शिक्षा पर निर्भर है

दर्शन शिक्षा के बिना दो कदम भी नहीं चल सकता या यूँ कहे शिक्षा के बिना दर्शन का अस्तित्व असंभव है। आईये इसको समझने का प्रयास करते हैं।

शिक्षा दर्शनके प्रसार के साधन के रूप में-

एडम के मतानुसार- "शिक्षा दर्शन का गत्यात्मक पहलू है और दर्शन शिक्षा का सैद्धान्तिक पहलू।" एक उदाहरण के लिए किसी भी वाहन का की यदि पूरा ढाँचा हो और बाकी ज़रूरी चीजें भी हों जैसे पेट्रोल आदि लेकिन यदि उसके पाँव या पहिये न हो तो वह वही खड़ा रहेगा; कोई गति नहीं करेगा अर्थात स्थूल हो जायेगा, निष्क्रिय हो जायेगा, और एक ही स्थान पर खड़े खड़े निष्क्रिय हो जायेगा, यही हाल विचार के साथ भी होता है, विचार भी यदि फैले नहीं, तो फलने का मौका नहीं मिलेगा इस लिए सैधान्तिक पक्ष के साथ-साथ व्यवहारिक पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। ये लोक प्रचलित विचार है की जो मशीन या गाड़ी चलती रहे तो वह ठीक भी रहती और मूल्यवान भी रहती है। इस आधार पर ये लोकोक्ति बनी है कि 'चलती का नाम गाड़ी' तालाब का पानी सड़ जाता क्योंकि वह एक स्थान पर खड़ा रहता है जबकि नदी का पानी गतिशील होने की वजह से कभी सड़ता नहीं बल्कि दूर तक पहुँचकर लोगों, पशुओं ,जंगलों की प्यास ही नहीं बुझाता बल्कि पूरी धरा को शस्यश्यामला बना देता है। इसी प्रकार दर्शन भी शिक्षा रूपी पहियों पर सवार होकर विश्व में भ्रमण करता है और विश्व को शैक्षिक दृष्टिकोण प्रदान करता है जिससे, पाठयक्रम में बदलाव, नई विधियों का निर्माण का मार्ग प्रशस्त करते हुए जीवन में रंग भरता है उमंग पैदा करता है। अतः सत्य ही कहा गया है शिक्षाके द्वारा ही कोई विचार या दर्शन सृजन तक पहुँचता है।

शिक्षा नए दर्शन के जन्म की पृष्ठभूमि तैयार करती हैः-

शिक्षा दर्शन को विश्व भ्रमण ही नहीं करवाती बल्कि नए विचारों से परिचित भी करवाती है, एक दर्शन को अन्य दर्शनों के साथ मूल्यों,सिद्धांतों, विधियों, विचार-शैली के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन का अवसर देती है, वाद विवाद करने का अवसर देती है, शिक्षा दर्शन को अनुभव व प्रयोग करने के साथ साथ तर्क की कसौटी पर कसने के लिए समाज व विद्वानों के मध्य ले जाती है, जिससे उस दर्शन की वैधता, उपयोगिता, विश्वश्नियता के आधार पर उसको मान्यता मिलती है।इसके साथ साथ आलोचना व समलोचना के बाद नए दर्शन का मार्ग भी प्रशस्त होता है। संसार में जितने भी प्रकार के दर्शन व विचारधाराएँ है वो इसी प्रक्रिया से होकर गुजारी हैं व स्थापित हुई हैं। यह पुर्णतः सत्य है कि दार्शनिक चिंतन, बौद्धिक क्षमता, तर्क और विचार शक्ति के अभाव में दार्शनिक सिद्धांतों का निर्माण नहीं हो सकता, क्योंकि बौद्धिक शक्ति के मूल मे शिक्षा ही निहित होती है। शिक्षा के बिना ज्ञान नहीं हो सकता और ज्ञान बिना तर्क-वितर्क, आलोचना, तुलना और समानता नहीं हो सकती। जिसके अभाव में नए दर्शन का जन्म नहीं हो सकता। जैसे

भारतीय दर्शन में आस्तिक दर्शन के बाद नास्तिक दर्शन का जन्म हुआ या साथ साथ जन्मे। एक दर्शन वेदों की प्रमाणिकता में विश्वास रखता है लेकिन दूसरा वेदों की प्रमाणिकता को नकारता है। इसी तरह से आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजन्वाद, यथर्थवाद, व अस्तित्ववाद आदि दर्शनों का उदय हुआ।इस प्रकार शिक्षा दर्शन के निर्माण मे सहायक होती है।

शिक्षा दार्शनिक विचारों को संचित और हस्तांतरित करती है:- किसी भी ज्ञान का संचय शिक्षा के बिना संभव नहीं। शिक्षा के बिना न तो विचार संचित रह सकता है न ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचारित या हस्तांतरित हो सकता। शिक्षा ही दर्शन को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढाती है चाहे वह मौखिक रूप में हो या पुस्तकों के माध्यम से लिखित रूप में। चाहे चित्रों के माध्यम से हो या चल-चित्रों के माध्यम से। अतः शिक्षा दर्शन को यात्रा में बनाये ही नहीं रखती बल्कि उसके साथ नये नए प्रयोग भी करती है। इस प्रकार शिक्षा दर्शन के निर्माण मे सहायक होती है।

शिक्षा दर्शन के लिए प्राणदायनी या संजीवनी है- शिक्षा दर्शन को अपनी जीवन्तता के गुण के कारण इसको प्रवाह में रखती है बल्कि दर्शन को मृत व अस्तित्वविहीन होने से बचाती है। शिक्षा दर्शन को सांसे देती है, इसको संरक्षण देती है।

शिक्षा दर्शन की कल्पना को मूर्तरूप प्रदान करती है- दार्शनिकों के जितने भी सूक्ष्म एवं अलौकिक या काल्पनिक या अमूर्त विचार होते है, शिक्षा ही उन विचारों को मूर्तरूप या स्वरूप प्रदान करती है। शिक्षा ही दार्शनिक विचारों, सिद्धांतों व कल्पनाओं तर्क की कसौटी पर कसती है, उनको परखती है, और दुनिया के सामने लाती है, उसे प्रयोग के योग्य बनाती है। उपरोक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है शिक्षा दार्शनिक विचार को अपनी क्रियाशीलता की वजह से सृजन तक लाती है।

शिक्षा दर्शन पर आश्रित है

शिक्षा दर्शन के बिना ऐसे है जैसे बिना रौशनी के आँख, बिना रौशनी के जैसे आँख कुछ भी देखने में सक्षम नहीं है, वैसे ही शिक्षा को बिना दर्शन के रास्ता दिखाई नहीं देता। अतः दर्शन के बिना शिक्षा चलने की शक्ति होते हुए भी चल नहीं सकती, उसे दिशा दिखाई नहीं देती या दिशाहीन हो सकती है।

दर्शन शिक्षा नीतियों, सिद्धांतों, पाठ्यक्रम निर्धारण करने में सहायक है- दर्शन के बिना न तो शिक्षा की दिशा निर्धारित की जा सकती है। दर्शन शिक्षा के स्वरूप, नीतियों विधियों, प्रविधियों, के निर्माण, अध्ययन व विश्लेषण करने में सहायक है। दर्शन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक,व्यापारिक, भाषायी, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व वैश्विक चुनौतियों को समझने में और उनका समाधान करने में सहायता करता है।

दर्शन शिक्षा के उद्देश्य निर्माण में सहायक है:- दर्शन समकालीन समाज का बारीकी से अध्ययन कर सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक,व्यापारिक, भाषायी, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व वैश्विक स्थितियों व आवश्यकताओं के अनुसार उद्देश्यों के निर्माण में सहायक है। इतना ही नहीं दर्शन उद्देश्यों की पूर्ति का मार्ग बताकर लक्ष्य तक पहुचने में सहायता करता है।

दर्शन व अनुशासन:- दर्शन दार्शनिक विचारधारा के अनुसार अनुशासन व्यवस्था करने में सहायता करता है। आदर्शवादी शिक्षा प्रणाली में कठोर अनुशासन होता है, प्रकृतिवादी स्वानुशासन और प्रयोजनवादी लचीले अनुशासन की पक्षधर हैं।

शिक्षक और छात्र की भूमिका तय करने में दर्शन शिक्षा की सहायता करता है:- दार्शनिक सोच के बिना यह तय कर पाना संभव नहीं कि शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की क्या भूमिका होगी, शिक्षा विद्यार्थी केन्द्रित होगी या शिक्षक केन्द्रित या लचीली होगी। उदाहरण के लिए आदर्शवादी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा शिक्षक केन्द्रित है, विद्यार्थी पूर्णतः शिक्षक पर निर्भर रहता है, स्वयं से कोई निर्णय नहीं ले सकता अतः इसमें पूरा नियंत्रण शिक्षक का होता है। प्रकृतिवादी व प्रयोजनवादी शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी केन्द्रीय भूमिका में होता है। हर कार्य विद्यार्थी को आधार मानकर किया जाता है। अतः शिक्षा प्रणाली की दर्शन पर आधारित है शिक्षक व छात्र की भूमिका भी वैसी ही होगी, वैसे ही नियम व सिद्धांतों का निर्माण किया जाता है। दर्शन इसमें शिक्षा की सहायता करता है ताकि स्थिति अनियंत्रित न हो जाए।

दर्शन शिक्षा के लिए दीपक के समान है- जिस तरह दीपक जलकर उजाला फैलाता है, अँधेरी राहों को रोशन करता है, और पथ प्रदर्शन करता है।इसी प्रकार दर्शन रूपी दीपक भी शैक्षिक लक्ष्यों को न केवल निर्धारित करता है बल्कि उनको प्राप्त करने का मार्ग भी तैयार किया जाए। दर्शन की सहायता बिना यह कार्य असंभव है क्योंकि दर्शन के दूरदृष्टियुक्त दृष्टिकोण के अभाव मे कोई भी शैक्षिक योजना सफल नहीं हो सकती। **स्पेंसर** भी इस मत का समर्थन करते हुए कहते हैं कि- "वास्तविक शिक्षा का संचालन वास्तविक दर्शन ही कर सकता है।"

अतः हम कह सकते हैं की शिक्षा व दर्शन में परस्पर गहन सम्बन्ध है। एक के अभाव मे दूसरा अस्तित्वहीन है। दर्शन व शिक्षा के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए **जेन्टाइल महोदय** ने लिखा है कि- "जो व्यक्ति इस बात में विश्वास करते है कि दर्शन से सम्बन्ध बनाये बिना, शिक्षा कि प्रक्रिया सुचारु रूप से चल सकती है, शिक्षा के विशुद्ध स्वरूप को समझने मे अक्षमता अभिव्यक्ति करते है । शिक्षा कि प्रक्रिया दर्शन कि सहायता के अभाव मे उचित मार्ग पर अग्रसरित नहीं हो सकती।"

सारांश

शिक्षा-दर्शन शैक्षिक समस्यायों को चिन्हित कर उनका निदान का रास्ता दिखता है। शिक्षा-दर्शन हमें शिक्षा के उद्देश्यों व लक्ष्यों से परिचय करवाता है बल्कि उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधनों की समीक्षा भी करता है। शिक्षा-दर्शन का सम्बन्ध ऐसा है जैसे शास्त्र और शस्त्र का है, जैसे भारतीय दर्शन में यह कहा जाता है कि शस्त्र को शास्त्र-युक्त होकर धारण करना चाहिए। शास्त्र शस्त्र का प्रयोग करते समय यह मार्गदर्शन करता है कि शास्त्र का प्रयोग किन परिस्थियों में किया जाए। शास्त्र के अभाव में शास्त्र विनाशकारी हो सकता है। वर्तमान में आतंकवाद इसी का दुष्परिणाम है। दर्शन शिक्षा के द्वारा हमे दिशा देता है की कौन सी दिशा कल्याणकारी होगी और कौन सी विनाशकारी।

शिक्षा-दर्शन के अभाव में किसी सिद्धांत,नीति व पाठ्यक्रम का निर्माण नहीं हो सकता है।पाठ्यक्रम के बिना समाज की शिक्षा की दिशा तय नहीं हो पायेगी अतः शिक्षा अंधकार में भटकती रहेगी। दर्शन के बिना शैक्षिक नीतियों व पाठ्यक्रमों का विश्लेषण व मूल्यांकन करना कठिन है। बिना मूल्यांकन कमियों और विशेशतायों का पता नहीं चलेगा और यदि ऐसा नहीं होता है तो सुधार की सम्भावना नहीं होगी। शिक्षा और जीवन दोनों में निरंतर परिवर्तन की संभावनाएँ रहती हैं क्योंकि शिक्षा के बिना समाज नहीं बदल सकता, और दर्शन के अभाव में शिक्षा दिशाहीन हो सकती है।अतः शिक्षा यदि दिशाहीन हो जाएगी तो समाज,राष्ट्र व विश्व दिशा भटक सकता है। अतः शिक्षा व दर्शन एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

- देवराज,(१९९४) दर्शन: स्वरूप,समस्याएं एवम जीवन-दृष्टि नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
- सिन्हा, अजित कुमार, (१९९१) समकालीन दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़।
- रमेशचन्द्र, (१९७४) Types of Philosophy by William Ernest hocking दर्शन के प्रकार (अनुवाद), राजस्थान दर्शन अकादमी।
- वर्मा, वेद प्रकाश, (१९८९) दर्शन की विवेचना, सिटी-जन प्रेस, नई दिल्ली।

- वालिया, जे. एस. (२०११) शिक्षा के दार्शनिक एवम् सामाजिक आधार,अहिम पॉल पब्लिशर्स, जालन्धर।
- यादव,नरेश कुमार (२०१२) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आरोही पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- दीवानचंद, (१९६८) दर्शन संग्रह, छोटे लाल भार्गव, जी० डब्ल्यू लॉरी एंड क०, लखनऊ ।
- राधाकृष्णन, (१९९८) भारतीय दर्शन, भाग-२, हिंदी अनुवाद प्रकाशक,राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट,दिल्ली
- सिन्हा, जदुनाथ,(२०००) भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली।
- गैरोला,वाचस्पति,(२००९) भारतीय दर्शन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

LBP PUBLICATION